अध्याय - ५

निष्कर्ष और सुझाव

५.१ प्रस्तावना

५.२ उच्चारण विषयक निष्कर्ष और सुझाव

५.३ लेखन विषयक निष्कर्ष और सुझाव

५.४ सर्वसाधारण निष्कर्ष और सुझाव

५.५ नए संशोधनके लिए कुछ विषय

५.१ प्रस्तावना :

प्रस्तुत शोधप्रबंधमें मराठी माध्यमके माध्यमिक स्तरपर विद्यार्थियोंके उच्चारण और लेखनमे पायी जानेवाली गलतियों का विवेचन किया है । इस अनुसंधान समस्याका हेतू यही है कि अध्यापक हिन्दी अध्यापन करते समय विद्यार्थियोंकी लेखन और उच्चारणकी ओर विशेष ध्यान दें । पिछले दो अध्यायोमें (अध्याय ३ में हिन्दी उच्चारण दोषोंके प्रकार तथा उनके कारण और अध्याय ४ में हिन्दी लेखन दोषोंके प्रकार तथा उनके कारण) अध्यापक प्रश्नावलीद्वारा और इण्टरव्यू द्वारा प्राप्त किए सामग्रीका विश्लेषण कर अन्वयार्थ लगाया किया गया है । प्रस्तुत अध्यायमें इसपर आधारित निष्कर्ष और सुझाव दिए गये हैं । उसी प्रकार इस विषयसे संबंधित संशोधन के लिए कुछ विषयभी सुझाए हैं ।

५.२ उच्चारण विषयक निष्कर्ष और सुझाव :

प्रस्तुत शोधप्रबंधके तीसरे अध्याय में विद्यार्थियोंके हिन्दी उच्चारण दोषोंके बारेमें विचार किया है, साथही अध्यापकों द्वारा प्राप्त सामग्रीका विश्लेषण कर अन्वयार्थ लगाया गया है । उनपर आधारित निष्कर्ष और सुझाव आगे परिच्छेदोमें प्रस्तुत किए गए हैं ।

तीसरे अध्यायमें सारणी क्रमांक ३.२ (पृष्ठांक ६०) पदवी-पदव्युत्तर परीक्षाके लिए होनेवाले विषयोंके बारेमें है । इस सारणीद्वारायह स्पष्ट होता है कि, ३० अध्यापकोमेंसे केवल १३ अध्यापक पदवी-पदव्युत्तर परीक्षा हिन्दी विषयमें उत्तीर्ण है । वास्तविक माध्यमिक स्कूलमें हिन्दी पढानेके लिए पदवी-पदव्युत्तर परीक्षा हिंदी विषयमेंही उत्तीर्ण होना चाहिए ।

उपाधि - पदवी

तीसरे प्रकरणकेही सारणी क्रमांक ३.३ (पृष्ठांक ६२) में हिंदी अध्यापकोंने बी.एड्. प्रशिक्षणके लिए चुने हुए अध्यापन पध्दतिके बारेमें है। इस सारणीद्वारा यह स्पष्ट होता है कि, ३० अध्यापकोंमेंसे २१ अध्यापकोंने बी.एड्. प्रशिक्षाके लिए हिन्दी अध्यापन पध्दति चुनी है।

वास्तविक हिन्दी पढानेवाले अध्यापकोंको हिन्दी अध्यापन पध्दतिका अभ्यास होना आवश्यक है।

उपर्युक्त दोनों परिच्छेदोंके आधारपर यह सुझाव दिया जाता है कि पदवी-पदव्युत्तर परीक्षा के लिए हिंदी प्रमुख या गौण विषय चुननेवाले तथा बी.एड्. अभ्यासक्रम के लिए हिन्दी अध्यापन पध्दति चुननेवाले अध्यापकों कोही हिन्दी विषय पढानेके लिए नियुक्त किया जाना चाहिए।

इसी प्रकरणके सारणी क्रमांक ३.४ में (पृष्ठांक ६४) हिन्दी परीक्षा उत्तीर्ण होनेवाले अध्यापकोंके संख्याके बारेमें है। इस सारणीद्वारा यह स्पष्ट किया जाता है कि, ३० अध्यापकोंमेंसे केवल १६ अध्यापकोंने हिन्दी परीक्षा दी है, अथवा उत्तीर्ण की है। वास्तविक हर हिन्दी अध्यापकको इसकी आवश्यकता है, जिससे उनके हिन्दी ज्ञानमें वृध्दि होनेके लिए मदद होती है।

इसपर यह सुझाया जा सकता है कि हिन्दी परीक्षा उत्तीर्ण होनेवाले अध्यापकोंकी नियुक्तिके समय प्राधान्य अर्स दिया जाए क अगर ऐसे अध्यापक मिलना असंभव है, तो नियुक्तिके बाद क्यों न हो, उन्हें हिन्दी परीक्षा देनेके लिए मुख्याध्यापकद्वारा प्रोत्साहन मिलना आवश्यक है। ऐसे अध्यापकोंको परीक्षाकी श्रेणीनुसार अतिरिक्त इन्क्रीमेंट सरकारद्वारा मिलनी चाहिए।

तीसरे प्रकरणमें सारणी क्रमांक ३.७ (पृष्ठांक ७०) उच्चारण दोषोंके कारणोंसे सहमत शिक्षक संख्याके बारेमें है। उच्चारण दोषोंके कारणोंको मिलनेवाला प्रतिसाद प्रतिशतके अनुसार नीचे दिया गया है।

१) स्कूलके अतिरिक्त अन्यत्र हिन्दीका वातावरण नहीं ।	८३.३०
२) शुध्द तथा स्पष्ट शब्दोच्चारणके श्रवण संधीका अभाव ।	८३.३०
३) मराठी मातृभाषाके उच्चारणका परिणाम ।	१००.००
४) ग्रामीण अनौपचारिक उच्चारणोंका परिणाम ।	८६.७०
५) स्कूलमें उच्चारण सुधारकी दृष्टिसे तासिकाओंका अभाव ।	८३.३०
६) प्रकट वाचनकी अधिकाधिक अवसरका अभाव ।	६६.७०
७) उच्चारण दोष सुधारनेकी दृष्टिसे व्यक्तिगत ध्यानका अभाव ।	८६.७०
८) दूरदर्शन, रेडियो, चित्रपट आदिद्वारा हिन्दी श्रवण अधिक, इसलिए विषय आसान और हिन्दीकी ओर दुर्लक्ष ।	८३.३०
९) कुछ विधार्थियोंके जिव्हादोषका उच्चारणपर दोष ।	८३.३०

इन कारणोंके अतिरिक्त अन्य सूचित किये गए कारण निम्नलिखित :

१) विधार्थी संख्या अधिक होनेके कारण व्यक्तिगत ध्यान नहीं दिया जाता ।

२) हिन्दीका प्रकट वाचन करनेकी प्रवृत्ति, शिक्षक और विधार्थी दोनोंको कम दिखाई देती है ।

३) हिन्दीकी ओर उपहासात्मक दृष्टिसे देखा जानेके कारण हिन्दीके उच्चारण जी चाहे वैसे करते हैं ।

४) शिक्षकोमें शुध्द उच्चारणका अभाव है ।

५) मौखिक संभाषणको स्कूलमें कम मौका मिलता है, इसलिए हिन्दी भाषाविषयक कुछ डरसा विधार्थियोंके दिलमें निर्माण होता है ।

६) आजकी परीक्षा पध्दतमीमें उच्चारणको जितना महत्व देना चाहिए उतना नहीं दिया जाता ।

उपर्युक्त कारणोंके संदर्भमें निम्नलिखित सुझाव सूचित किये जा सकते है।

हिन्दी तासिकाके समय हिन्दी भाषाका वातावरण निर्माण करना चाहिए। क्योंकि विद्यार्थियोंके चारोंओर जिस भाषाका वातावरण होता है, उसको वह अपने आप अपनाता है। इससे विद्यार्थियोंको अधिकाधिक हिन्दी सुननेका और बोलनेका मौका मिलेगा।

विद्यार्थियोंके भाषाज्ञानकी मर्यादाओं को ध्यानमें रखकर अगर पाँचवी कक्षासेही इस वातावरणका प्रयोग करें, तो निश्चित रूपसे विद्यार्थियोंके उच्चारण सुधारमें मदद होगी।

स्कूलमें उच्चारण-सुधारकी दृष्टिसे तासिकाएँ अधिक बढानी चाहिए। हफ्तेमें कमसे कम पाँच या छः तासिकाएँ चाहिए, क्योंकि अगर शुध्द हिन्दी सिखानी है, तो व्याकरण आदिका अधिक अभ्यास करवा लेना चाहिए। हिन्दी यह आसान विषय है, ऐसी जिन विद्यार्थियोंकी गलतफहमी है, उसे दूर करना चाहिए।

उसी तरह कुछ सुझाव इस प्रकार है -

- विद्यार्थियोंको उच्चारण स्थलोंकी योग्य जानकारी देना।
- विद्यार्थियोंकी शारीरिक जाँच करवा लेना।
- मराठी और हिन्दी शब्दोंका उच्चारणकी दृष्टिसे फर्क समझाना।
- शुध्द तथा स्पष्ट शब्दोच्चारणकी श्रवण संधी उपलब्ध करवाना। इसके लिए अच्छे वक्ताओंके भाषण, रेडिओ-टी.व्ही. के समाचार सुनवाना।

- शिक्षकोंका वाचन शुध्द तथा स्पष्ट होना आवश्यक। इस दृष्टिसे शिक्षकको प्रयत्न करना चाहिए।
- मौखिक संभाषणका मौका विद्यार्थियोंको अधिकाधिक मिलना चाहिए, इससे हिन्दीके बारेमें होनेवाला डर कम होनेमें मदद होगी।
- आजकी परीक्षा पध्दतिमें उच्चारणको महत्व देना चाहिए, क्योंकि अच्छे मार्कसे उत्तीर्ण होनेवाले विद्यार्थियोंके उच्चारण सदोष दिखायी देते है। इसलिए उच्चारणकी परीक्षा रखनी चाहिए।

तीसरे प्रकरणके सारणी क्रमांक ३.८ (पृष्ठांक ७३) में उच्चारण दोषोंपर उपाययोजनाओंसे सहमत शिक्षक संख्याके बारेमें है। उच्चारण दोषोंपर उपाययोजनाओंको मिलनेवाला प्रतिसाद प्रतिशतके अनुसार नीचे दिया गया है।

१) विद्यार्थियोंकी उच्चारण स्पर्धा लेना।	७०.००
२) भाषण और संवाद स्पर्धा लेना।	९०.००
३) योग्य उच्चारणके लिए ध्वनिर्यंत्रकी चित्रोंद्वारा जानकारी लेना।	६३.३०
४) विद्यार्थियोंके व्यक्तिगत उच्चारणकी ओर ध्यान देना।	८०.००
५) स्वराघात तथा विरामचिन्होंका उपयोग करनेके लिए विद्यार्थियोंका सतत अभ्यास लेना।	८०.००
६) अध्यापनमें पुनरावृत्ती नियमका पालन करना।	६०.००
७) शिक्षकोंने अपना आदर्श वाचन उचित ढंगसे करनेका प्रयत्न करना।	८६.६०
८) विद्यार्थियोंको शुध्द तथा अशुध्द उच्चारण टेपरिकार्डरद्वारा बताना।	७३.९०

९) दूरदर्शन, रेडिओ, तथा चित्रपटद्वारा विद्यार्थियोंको हिन्दी भाषाकी श्रवणसंधी अधिकाधिक देना। ८०.००

इन उपाययोजनाओंके अतिरिक्त अन्य सूचित की गई उपाययोजना निम्नलिखित है -

१) साहसी तथा विनोदी आशयकी छोटी किताबे विद्यार्थियोंको पढनेके लिए देगा।

२) हिन्दी कविता, सुविचार, व्याकरण नियम आदि कंठस्थ करवा लेना।

३) उत्तम हिन्दी वक्ताओंके भाषण सुनवाना।

४) हिन्दी नाटयस्पर्धा, एकांकीका आयोजन करना।

५) हिन्दी तासिकाके समय हिन्दीमें ही बाते करनेके लिए अनिवार्य करना।

६) प्रार्थनाके समय हिन्दीमें प्रतिज्ञा लेना।

७) प्रार्थनाके बाद हिन्दी सुविचार, कबीरके दोहे आदि कहनेके लिए विद्यार्थियोंका प्रवृत्त करना।

८) उर्दू, अरबी, फारसी शब्दोंके उच्चारण वैशिष्टय शिक्षक और विद्यार्थी दोनोंको समझानेकी दृष्टिसे प्रयत्न करना।

९) कुछ गद्य पाठोंका स्नेहसम्मेलनके लिए नाटयीकरण आयोजित करना। इससे उच्चारण भी सुधरेंगे और पाठका आशय अच्छी तरह ध्यानमें रहने मदद होगी।

१०) विद्यार्थियोंकी उच्चारण स्पर्धा लेना।

११) अच्छे फिल्मी डायलॉग कंठस्था करवा लेना।

उपर्युक्त उपाययोजनाओंके संदर्भमें निम्नलिखित सुझाव सूचित किये जा सकते है।

उच्चारण स्थल की आकृति -

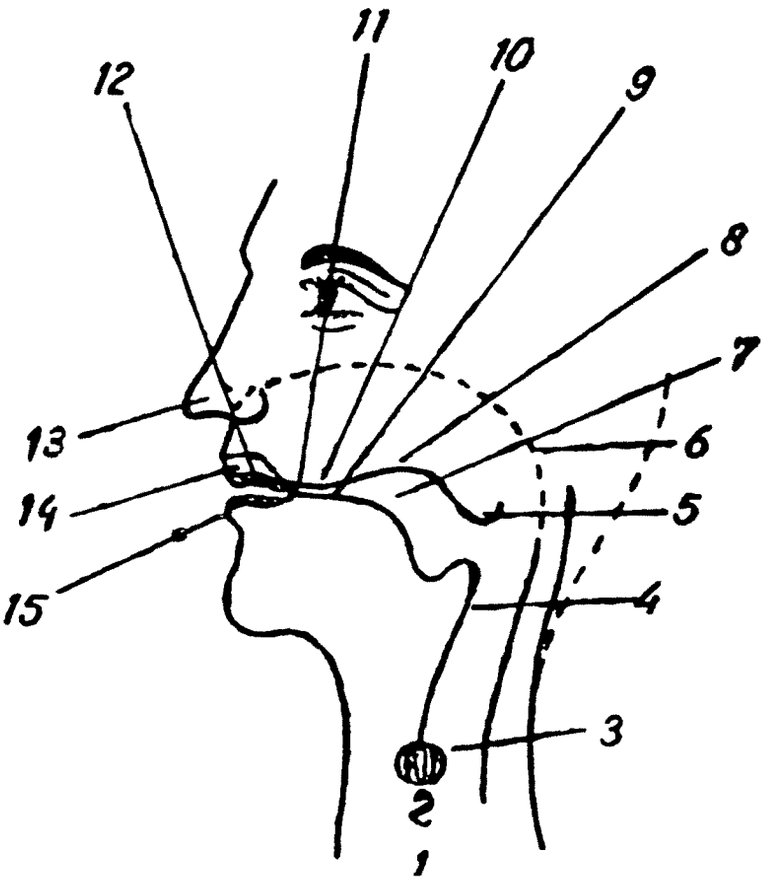

उच्चारण स्थल

1. श्वास नलिका (Wind pipe)
2. कंठिपिटक (Larynx)
3. स्वरतंत्री (Vocal chords)
4. अभिकाकल (Epiglottis)
5. काकल (कौवा) (Uvula)
6. नासिका विवर (Nasal cavity)
7. कण्ठ (Guttur)
8. कोमल तालु (Soft Palate)
9. जीभ (Tongue)
10. मूर्धा (Hard Palate)
11. वर्त्स (Teeth ridge alveola)
12. ऊपर के दांत (Upper teeth)
13. नाक (Nose)
14. ऊपर के ओष्ठ (Upper lip)
15. निचला अष्ठ (Lower lip)

विद्यार्थियोंके शुध्द उच्चारणके लिए विविध उच्चारण स्थानोंकी जानकारी स्लाईड्द्वारा देते हुए कौनसे वर्णोंका किस उच्चारण स्थलसे उच्चारण किया जाता है, आदिके बारेमें जानकारी दी जा सकती है। इससे विद्यार्थियोंका उच्चारण शुध्द करनेकी दृष्टिसे मदद होगी। (देखिए पृष्ठ १०१अ)

आज कक्षामें विद्यार्थियोंका संख्या अधिक है, व्यक्तिगत रूपसे उनके उच्चारण सुधारना कठिन है, फिरभी उच्चारणोंकी गलती बार-बार करनेवाले विद्यार्थियोंको टेपरिकार्डरद्वारा सही उच्चारण सुनवाकर, शुध्द उच्चारणकी कसौटी ली जा सकती है।

हिन्दीका अध्यापन करनेवाले कई शिक्षक स्वयं गलत उच्चारण करते है। अर्थात विद्यार्थीभी उन्हींका अनुकरण करते है। इसपर यह सुझाव सूचित किया जा सकेगा कि, हिन्दी अध्यापककी नियुक्ति करते समय उसके उच्चारणके संबंधमें कसौटी ली जाए, ताकी सभी विद्यार्थीभी अनुकरणद्वारा शुध्द उच्चारण करेंगे।

कई अध्यापकोंने साहसी तथा विनोदी आशयकी छोटी किताबें विद्यार्थियोंको पढनेके लिए देना चाहिए, इससे उच्चारण सुधारमें मदद होगी, ऐसा कहा है, लेकिन यह उपाययोजना संशोधकके मतानुसार अयोग्य है, क्योंकि विद्यार्थियोंको किताबे पढने देकर हम उच्चारण ठीक नहीं कर सकते। इसके लिए प्रत्यक्ष कक्षामेंही विद्यार्थियोंद्वारा प्रगट वाचन ले, जिससे उच्चारण ठीक हो सकेंगे।

कक्षामें मौखिक प्रश्न किये जाते है, लेकिन पूर्ण वाक्यमें उत्तरकी अपेक्षा नहीं की जाती। अपूर्ण वाक्यमें विद्यार्थी जवाब या उत्तर देते हैं। शिक्षकभी इस अधूरे जवाबको स्वीकार करते हैं। इससे बालक वाक्य बनाना नहीं सीखते और शुध्द उच्चारणका भी अभ्यास नहीं होता। इसपर यह सुझाव सूचित किया जाता है कि, कक्षामें मौखिक प्रश्न किये जाना चाहिए, और पूर्ण वाक्यमेंही उत्तरकी अपेक्षा की जाय।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

पाठ पढाते समय कभी कभी पाठमें संयुक्ताक्षरोंके शब्द होते है । उसका उच्चारण विद्यार्थी ठीक ढंगसे नहीं कर पाते इसलिए शिक्षकका पाठ पढाते समय ऐसे शब्दोंकी व्युत्पत्ति, संधि या समास अंशोमें उच्चारण, आदिका ज्ञान देकर बडे-बडे म शब्दोंका उच्चारण शुध्द करवाया जाय ।

विद्यार्थियोंको मूलवर्णकी ध्वनिका ज्ञान कभी कभी नहीं होता इसलिए उनके शब्दोंके उच्चारण अशुध्द होते है । इसलिए प्रथम विद्यार्थियोंको वर्णकी ध्वनिका ज्ञान देना चाहिए ।

बालक में अनुकरणकी अपूर्व क्षमता होती है । वह अनुकरण के माध्यमसे कठिन से कठिन तथ्य समझ लेता है । अगर उसे शुध्द उच्चारण करनेवाले लोगों विद्वानों आदिके साथ रखा जाये तो उसमें उच्चारण दोषका भय नहीं रहेगा ।

उच्चारणमें कब किस शब्द पर बल देना है, उसका बडा महत्व है । यह भावभेद एवं अर्थभेदकी जानकारी करता है । इसलिए उच्चारणमें स्वराघात पर विशेष ध्यान देना चाहिए । स्वराघात का अभ्यास वाचनके समय संवाद, नाटक, सस्वर वाचन व भावानुकूल वाचनके रूपमें कराया जा सकता है । स्वरके उतार-चढाव पर ध्यान देनेसे स्वराघात का अभ्यास हो जाता है ।

५.४ लेखन विषयक निष्कर्ष और सुझाव :

प्रस्तुत शोधप्रबंधके चौथे अध्यायमें विद्यार्थियोंके हिन्दी लेखन दोषोंके बारेमें विचार किया है, साथही अध्यापकोंद्वारा प्राप्त सामग्रीका विश्लेषण कर अन्वयार्थ लगाया गया है । उनपर आधारित निष्कर्ष और सुझाव आगे परिच्छेदोमें प्रस्तुत किए गए है ।

चौथे प्रकरणमें सारणी क्रमांक ४.५ (पृष्ठांक ८९) लेखन दोषोंके कारणोंसे सहमत शिक्षक संख्याके बारेमें है । लेखन दोषोंके कारणोंको मिलनेवाला प्रतिसाद प्रतिशतके अनुसार नीचे दिया गया है ।

१) विद्यार्थी लेखन ध्यानसे नहीं करते ।	१००.००
२) विद्यार्थियोंके लेखनकी ओर व्यक्तिगत ध्यानका अभाव ।	८३.३०
३) उचित मार्गदर्शनका अभाव ।	६६.७०
४) हिन्दी लेखनपर मातृभाषाका परिणाम ।	९६.७०
५) कुछ शब्दोंको उच्चारित ध्वनिसमान लिखना ।	१००.००
६) मात्रासंबंधी गलतियाँ करना ।	९३.३०
७) संयुक्त अक्षर लेखनकी गलतियाँ करना ।	८०.००

इन कारणों के अतिरिक्त अन्य सूचित किये गए कारण निम्नलिखित है :

१) मातृभाषाका लेखन अशुध्द उसकाही परिणाम हिन्दी भाषापर होता है ।

२) हिन्दी तासिकाएँ अपूर्ण, इसलिए लेखन दोषोंकी ओर दूर्लक्ष किया जाता है ।

३) उर्दू तथा अन्य भाषाओंका प्रभाव हिन्दी लेखनपर होता है ।

४) पालकोंका सहकार्य लेखन-दोष सुधारनेमें कम मिलता है ।

५) हिन्दीकी लिपि देवनागरी होनेके कारण विषय आसान लगता है, और अन्जानेमें दूर्लक्ष कियाजाता है ।

उपर्युक्त कारणोंके संदर्भमें निम्नलिखित सुझाव सूचित किये जा सकते है ।

आजकल अधिक विद्यार्थी संख्याके कारण विद्यार्थियोंके लेखनकी ओर जितना आवश्यक है, उतना ध्यान नहीं दिया जाता । विद्यार्थीभी समझ जाते हैं, कि अध्यापक अपनी कापियोंकी जाँच नहीं करते । इसलिए वे भी लेखनकी ओर इतना अधिक ध्यान नहीं देते । इसपर यह सुझाव सूचित किया जा सकता है कि, अध्यापकको बीच बीचमें किसीभी विद्यार्थीकी कापी जाँच करनी चाहिए

और शुध्द लेखनके बारेमें मार्गदर्शन करना चाहिए। इससे विद्यार्थी डरके मारे क्यों न हो, शुध्दलेखनकी ओर ध्यान देंगे।

कुछ शब्द लिखते समय विद्यार्थी मातृभाषाके शब्दों जैसेही लिखते है।

चौथे प्रकरणमें सारणी क्रमांक ४.६ (पृष्ठांक ९१) मे लेखनदोषोंपर उपाययोजनाओंसे सहमत शिक्षक संख्याके बारेमें है। लेखन दोषोंपर उपाय-योजनाओंका मिलनेवाला प्रतिसाद प्रतिशतके अनुसार नीचे दिया गया है।

१) श्रुत लेखन और अनुलेखनके लिए समय सारिणीमें तासिका रखी जाए।	८०.००
२) विद्यार्थियोंके लेखन दोषोंकी ओर व्यक्तिगत ध्यान देना और योग्य मार्गदर्शन करना।	८६.७०
३) निबंधोंके आदर्श विद्यार्थियोंके सामने रखना।	८३.३०
४) विद्यार्थियोंकी निबंध स्पर्धा रखना।	८६.७०
५) अक्सर होनेवाले गलतियोंका चार्ट तैयार कर कक्षामें लगाना।	९३.३०
६) शुध्द लेखनके नियमोंका चार्ट सोदाहरण तैयार कर कक्षामें लगाना।	९३.३०
७) मातृभाषाके प्रभावसे विद्यार्थी जो गलतियाँ करते हैं, उनको अच्छे ढंगसे समझाना।	९३.३०
८) -ह्रस्व दीर्घ शब्दोंकी सूची तैयार कर कक्षामें लगाना।	८०.००
९) मराठी और हिन्दी शब्दोंके लिंग भेद स्पष्ट करना।	९३.३०
१०) विद्यार्थियोंके उच्चारण अगर सदोष हैं, तो लेखनभी सदोष होता है, इसलिए उच्चारणकी ओर ध्यान देना।	७३.९०

११) शुध्द लेखनके लिए कुछ गुण रखना चाहिए, जिससे विद्यार्थी शुध्द लेखनका अधिक प्रयास करेंगे ।	८६.६०
१२) शिक्षक जब आदर्श वाचन करते हैं, तब विशेष शब्द कैसे लिखा जाता है, इसके बारेमें अध्यापकका योग्य मार्गदर्शन आवश्यक ।	९३.३०

इन उपाययोजनाओंके अतिरिक्त अन्य सूचित की गई उपाययोजना निम्नलिखित है ।

१) हररोज पाँचसे दस कठिन शब्द दस बार लिखनेके लिए कहना ।
२) कंठस्थ करनेपर बल देनेसे विद्यार्थियोंका लेखन सुधारनेमें मदद होगी ।
३)-ह्रस्व दीर्घ उच्चारणोंका ठीक ढंगसे अभ्यास लेनेपर लेखनदोष सुधार सकेंगे ।
४) अक्सर होनेवाले लेखनदोष एकत्र कर विद्यार्थियोंकी कसौटी (परीक्षा) लेनी चाहिए और जिन विद्यार्थियोंके अधिकाधिक शब्द सही होंगे, उन्हें बक्षिस देकर प्रोत्साहन देना चाहिए ।

उपर्युक्त उपाययोजनाओंके संदर्भमें निम्नलिखित सुझाव सूचित किए जा सकते हैं ।

हिन्दीका अध्यापकही नहीं, तो सभी अध्यापकोंको विद्यार्थियोंके शुध्द लेखनके तरफ ध्यान देना चाहिए । क्योंकि हिन्दीकी तासिकाएँ कम होनेके कारण केवल हिन्दी शिक्षकही अशुध्द लेखन सुधारें, यह असंभव है ।

निबंध तथा कापियोंकी जाँचके बाद जो शब्द अशुध्द दिखायी देते है, उनको पुन: लिखवाकर उसकी समयपर जाँच करनीही चाहिए ।

श्रुतिलेख सप्ताहमें कमसे कम एकबार लिखवाया जाय । निबंधलेखनद्वारासभी अशुध्दियोंकी निवारण किया जा सकता है ।

जिन शब्दोंको अधिकांश बालक अशुध्द लिखते हों, उन शब्दोंके मानचित्र बनाकर कक्षाओंमें टाँगे जाये ।

बालकोंको वाचनालय की सुविधा अधिक से अधिक दी जाए और पढने की प्रेरणाभी दी जाए ।

देखकर शुध्द लिखनेकी प्रवृत्ति जागृत करनेके लिए पुस्तकोंसे यथांश उद्‌धृत करवाये जाए । भाषाके अध्यापकोंकी नियुक्ति की जाए और उन्हे नव-प्रशिक्षण दिया जाय ।

मराठी और हिन्दी शब्दोंके चार्ट बनाकर कक्षामें लगाना चाहिए । जिससे विधार्थी बार-बार देखकर शब्दोंका शुध्द रूप उनके मनमे दृढ होनेके लिए मदद होगी ।

स्कूलके टाइम-टेबल में हिन्दीकी तासिकाएँ कम रहती है । हिन्दी लेखनके लिए तासिका नहीं रखी जाती । इसलिए टाइम-टेबलमे हिन्दी लेखनकी तासिका रखना चाहिए । ताकि उसकी ओर ध्यान दिया जा सकेगा ।

हिन्दीमें कुछ उर्दू शब्दभी होते हैं । जिसका लेखन ठीक ढंगसे विधार्थी नहीं करते । उदा. जमाना-जमाना । हिन्दी अध्यापकको कुछ उर्दू शब्दोंके लेखनके संबंधी नियम बताना चाहिए । जिससे विधार्थी शुध्द लिख सकेंगे ।

लेखनसंबंधी अशुध्दियोंके निराकरणके लिए बालक और अध्यापक दोनोंको प्रयत्न करना होगा । इस संबंधमें निम्नलिखित साधन अपना जा सकते हैं ।

<u>स्वयं संशोधन विधि</u> -

इस विधिद्वारा यह प्रयास किया जाना है कि विधार्थी स्वयं अपनी अशुध्दियोंको जान जाए । इस दिशामें यह उपाय काममें लाए जाते है -

१) कोश का उपयोग करके,
२) शुध्द शब्दसूची देखकर,
३) अशुध्दियोंका स्वयं निरीक्षण करके ।

शुध्द उच्चारणका अभ्यास -

विद्यार्थियोंकी कई लेखन-अशुध्दियाँ इस कारणभी होती हैं, कि वह शब्दोंका शुध्द उच्चारण नहीं करते । अशुध्द उच्चारणके साथ-साथ लेखनभी अशुध्द करते है । इसलिए विशेष रूपसे संयुक्त वर्णोंका उच्चारण शुध्द करनेके लिए अध्यापकको यह बताना चाहिए कि कौनसा वर्ण मुखके किस स्थानसे उच्चारित किया जाता है ।

व्याकरणके ज्ञानके अभावमेंभी लेखन संबंधी अशुध्दियाँ अधिक होती है । इसलिए यह आवश्यक है कि, बालकोंके व्याकरण संबंधी ज्ञानको पुष्ट किया जाय । इस संबंधमें व्याकरणके निम्नलिखित नियमोंका ज्ञान सहायक सिध्द होगा ।

- बहुवचन बनानेका नियम सिखाना ।
- क्रियासंबंधी नियमोंका ज्ञान कराना ।
- कारकोंकी जानकारी देना ।
- वर्णोंको संयुक्त करनेका ज्ञान देना ।
- उपसर्ग और प्रत्यय का ज्ञान कराना ।

शुध्द लेखन का अभ्यास -

शब्दोंको बार-बार लिखानेसे विद्यार्थियोंका शुध्द लेखन सुधार सकते हैं । क्योंकि किसी शब्दको लिखते समय बालक उसका रूपभी देखता जाता है । साथही साथ वह मनमें शब्दोंका उच्चारणभी करता जाता है । लिखते समय उसके हाथकी मांसपेशियाभी सक्रिय रहती हैं ।

बहुतसे विद्यालयोंमें शुध्द लेखनके लिए ` श्रुत-लेख ` का सहारा लिया जाता है, इससे शिक्षकके उच्चारणके साथ-साथ -ह्रस्व दीर्घ शब्द विद्यार्थी समझकर लिखते हैं ।

<u>खेल विधि</u> -

शुध्दलेखन या अक्षर विन्याससंबंधी ` खेल-विधि ` काभी सहारा लिया जा सकता है । इस संबंधमें कुछ खेलोंका वर्णन नीचे किया है ।

<u>अक्षर विन्यास प्रतियोगिता</u> -

पहले कक्षाको दो समूहोंमें विभाजित कर लिया जाए, फिर पूछे गये शब्दोंकी वर्तनी, बारी-बारीसे दोनों समूहोंमें बताएँ । जिस समूहकी कम अशुध्दियाँ होंगी, वह विजयी समझा जायेगा । अन्तमें वे बालक शब्दके शुध्द स्वरूपको पाँच-पाँच बार लिखेंगे, जिन्होंने अक्षर विन्यास संबंधी अशुध्दियाँ की हैं ।

श्यामपटपर एक शब्द लिख दिया जाए । बालक उसे कुछ क्षण देखें । फिर उस शब्दको पोंछा दिया जाए, और बोलकोंको वर्तनी बतानेके लिए कहा जाए ।

किसीभी शब्दको लेकर उसके अक्षरोंको उलट फेर एक श्यामपटपर लिख दिया जाए, फिर बालकोंद्वारा शुध्द शब्दकी खोज कराई जाए । बालकोंसे शब्दोंकी अन्त्याक्षरी कराई जाए ।

शब्दोंमें किसी अक्षर को हटा दिया जाए, और फिर बालकोंको रिक्त स्थानकी पूर्तिके लिए कहा जाए ।

इसके लिए बालकोंको शब्द कोष का प्रयोग करनेके लिए प्रोत्साहित करते रहना चाहिए। इससे जहाँ कहीं भी उन्हें किसी शब्दके संबंधमें संदेह होगा, वे उसका निवारण बडी सरलतासे कर सकेंगे और शुध्दलेखन संबंधी सतर्क रहेंगे।

शब्दसूची -

जिन शब्दोंका बालक अशुध्द लेखन करता है और अध्यापक उनको शुध्द कर देता है। ऐसे शब्दोंकी एक सूची बना लेनी चाहिए, जिन्हें बालक अपनी छोटी अभ्यास पुस्तिकामें लिख लें। समय समयपर वह इन शब्दोंको देखे और उनका वाचन करे।

इस सब उपाययोजनाओंके अतिरिक्त अध्यापकको भी हमेशा सतर्क रहना चाहिए, कि वे कौनसी गलतियाँ करते हैं, पहलेसे अगर ध्यान दिया जाय तो विद्यार्थी और अध्यापक दोनोंको लेखन दोष दूर करनेमें कठिनाइ नही होती।

सर्वसाधारण निष्कर्ष और सुझाव :

अबतक उच्चारण और लेखनमें होनेवाले दोषोंपर आधारित निष्कर्ष और सुझावके बारेमें चर्चा की है।

इस विभागमें सर्वसाधारण निष्कर्ष और सुझाव प्रस्तुत किए हैं।

१) हिन्दी अध्यापनके बारेमें बार-बार अध्यापकोंके कृत्रिसत्रोंका आयोजन होना चाहिए।

२) अच्छे वक्ताओंके भाषणोंका आयोजन हिन्दी सुधारनेकी दृष्टिसे आवश्यक है।

३) रेडिओ, टी.व्ही. के पाठ कक्षामें होना चाहिए। (आज इसका अभाव दिखाई देता है।)

४) हिन्दी अध्यापनसंबंधी (५ वी से ७ वी) जो अभ्यासक्रम है, वह विद्यार्थियोंकी बौध्दिक क्षमता, स्तर तथा रुचिके अनुसार चाहिए।

(५ वी से ७ वीके कुछ पाठ आकलनकी दृष्टिसे कठिन लगते हैं।)

५) उच्चारण और लेखनको समय सारिणीमें महत्व देनाचाचाहिए, और शुध्द उच्चारण तथा शुध्द लेखनको परीक्षामें अलग गुण देना चाहिए।

६) शुध्द उच्चारण और लेखनका महत्व पाँचवी कक्षासे ही दृढ करना चाहिए ताकि इस बारेमें वे हमेशा सतर्क रहे।

७) विद्यार्थियोंका हिन्दी भाषाके बारेमें होनेवाला भय तथा संकोच दूर करनेकी दृष्टिसे अध्यापकको विद्यार्थियोंके साथ सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। अगर किसी विद्यार्थीने अशुध्द उच्चारण किया हो, तो अन्य विद्यार्थियोंके सामने उसका मजाक नहीं उडाना चाहिए,बल्कि उसे उस बारेमें योग्य मार्गदर्शन करना चाहिए।

८) शुध्द लेखन और शुध्द उच्चारणके लिए विद्यार्थियोंको अधिकाधिक वाचन करना चाहिए लेकिन आजकल स्कूलके लायब्ररीमें हिन्दीकी किताबें पर्याप्त स्वरूपमें नहीं दिखाई देती, ऐसी अवस्थामें विद्यार्थियोंसे अच्छे हिंन्दीकी अपेक्षा करना व्यर्थ है। अगर मुख्याध्यापकने नयी किताबें खरीदनेके बारेमें प्रोत्साहन दिया और विद्यार्थियोंका पढनेके लिए मजबूर किया, तो कुछ मात्रातक क्यों न हो, विद्यार्थी शुध्द हिन्दी बोल तथा लिख सकेंगे।

९) स्कूलमें हस्तलिखित मासिक निकाला जाता है, जिसमें विद्यार्थी खुदके सुविचार, कविता, लेख आदि लिखते हैं, इस मासिकमें होनेवाले हिन्दी विभागके प्रति कुछ विद्यार्थी तथा शिक्षक उदासिन दिखाई देते है। अगर इसमे हिन्दी विभाग अनिवार्य रूपमें रखकर विद्यार्थियोंको कुछ लिखनेके लिए प्रोत्साहित

किया जाए, तो कुछ मात्रात्क क्यों न हो धीरे धीरे विद्यार्थी हिन्दी पढने तथा लिखनेमें रुचि लेंगे ।

१०) अध्यापकको नियमित रूपसे विद्यार्थियों द्वारा किये गए कार्यकी जाँच करनी चाहिए और उच्चारण तथा लेखन संबंधी अशुध्दियोंको और उनका ध्यान आकृष्ट करते हुए शब्दोंका शुध्द उच्चारण तथा लेखनका अभ्यास करवाना चाहिए ।

११) जिन बालकोंकी वाणी अथवा श्रवणेंद्रियमें किसी प्रकारका दोष हो, उसका उपचार वाणी विशेषज्ञों, मनोवैज्ञानिकों अथवा चिकित्सकोंद्वारा जलदी, से जल्दी करवा देना चाहिए ।

१२) उच्चारण तथा लेखनपर ध्यान देना केवल भाषा-शिक्षक का ही कार्य नहीं है । सभी विषयोंके शिक्षणमें उच्चारण तथा लेखनपर ध्यान दिया जाये, तो उच्चारण तथा लेखनमें सुधार शीघ्रता से होगा । सभी विषयोंके अध्यापकोंको इस पहलू पर बल देना चाहिए ।

५.५ नए संशोधनके लिए प्रस्तुत संशोधनसे संबंधित कुछ विषय :

हिन्दी उच्चारण और लेखनदोषोंका अभ्यास करते समय, जो विषय प्रस्तुत संशोधनसे प्रत्यक्ष संबंधित नहीं थे इसलिए संशोधनकर्ताने उसका गहरा अभ्यास नहीं किया । फिरभी अगर किसीने इन निम्न विषयोंका गहरा अभ्यास या संशोधन किया तो प्रस्तुत संशोधन अधिक निखर उठेगा ।

१) शिक्षाका माध्यम मातृभाषा होनेके कारण मातृभाषा मराठीके उच्चारण और लेखनदोषोंका, उसी प्रकार हिन्दी भाषाके उच्चारण और लेखनदोषोंका तुलनात्मक अभ्यास किया जाए, तो हिन्दीके अध्ययन-अध्यापनमें इसका लाभ होगा ।

२) हिन्दी उच्चारण और लेखनसुधारकी दृष्टिसे किन दृक्श्राव्य साधनोंका प्रयोग करना चाहिए, इस बारेमें भी संशोधन होना आवश्यक है ।

३) हिन्दी विषयका मूल्यमापन अधिक यथार्थ, विश्वसनीय और उद्देश्यानुसार होना आवश्यक है, इसलिए विविध मूल्यमापन साधनोंका प्रयोग होना चाहिए । विद्यार्थियोंको शुध्द उच्चारणकी ओर आकर्षित करनेके लिए मौखिक परीक्षा कहाँतक सफल होगी ? इस विषयमेंभी संशोधन आवश्यक है ।

४) आज व्याकरणके अध्ययन-अध्यापनके बारेमें अध्यापक तथा विद्यार्थी दोनों उदासिन दिखाई देते हैं, लेकिन व्याकरण शुध्द भाषाकी आधारशिला होनेके कारण व्याकरणका अध्यापन अधिकाधिक रूचिपूर्ण कैसे किया जाए, इस विषयका भी अभ्यास होना जरूरी है ।

५) हिन्दी रचनाके विविध प्रकारोंका (कहानी, पत्रलेखन निबंध आदि) अध्यापन कैसे रूचिपूर्ण किया जाए, उसी प्रकार उसकी जाँच ठीक ढंगसे कैसे करना चाहिए ? इस बारेमें भी गहरा अभ्यास होना चाहिए ।

६) किसीभी कक्षाके दो समूह कर, एक समूह को टी.व्ही. तथा रेडिओके हिन्दी समाचार सुनवाना, और दूसरे समूहको न सुनवाकर, दो समूहोंमें उच्चारण तथा लेखनमें कौनसा फर्क दिखायी देता है ? इसका प्रयोगात्मक अभ्यास करना ।

७) किसी कक्षाके दो समूह कर, एक समूहको हिन्दी पाठ या कविताका अध्यापन सरल हिन्दीमें और दूसरे समूहको हिन्दी पाठ या कविता का मराठीमें अनुवाद कर अध्यापन किया जाए, तो इन दोनोंमें उच्चारण और लेखनकी दृष्टिसे होनेवाले फर्क का अभ्यास भी किया जा सकता है ।

८) अन्य भारतीय भाषाओंकी ध्वनियोंका हिन्दी भाषाके ध्वनियोंके साथ तुलनात्मक अभ्यास यहभी संशोधनका विषय हो सकता है ।